 Hema Agarwal
(Assistant professor
D.N. College, MRT)

B.Ed - II year
Course Code - E-401
Course Title - Assessment for Learning
Unit - I
Topic - Open Book Examination & Grading System

खुली पुस्तक परीक्षा
(Open Book Examination)

खुली पुस्तक प्रणाली में परीक्षार्थियों को सवालों के जवाब देते समय अपने नोट्स, पाठ्य पुस्तकों और अन्य स्वीकृत सामग्री की मदद लेने की अनुमति होती है। वे प्रश्नों के उत्तर देते समय इन पुस्तकों का प्रयोग कर सकते हैं।

खुली पुस्तक परीक्षा दो प्रकार की होती है।

1. प्रतिबन्धित (Restricted)
2. अप्रतिबन्धित (Unrestri

1.) **प्रतिबन्धित (Restricted)** - इस परीक्षा प्रणाली में परिक्षार्थियों के परीक्षा भवन में अपने साथ परीक्षा संस्था द्वारा अनुमोदित पाठ्य-पुस्तक अथवा उसके द्वारा तैयार की गई पाठ्य सामग्री को ही ले जाने की छूट होती है, अन्य किसी पाठ्यपुस्तक ले जाने की छूट नहीं होती। इसे मुक्त पाठ्य आधारित ऑकलन (open Text Based Assessment) कहा जाता है।

2.) **अप्रतिबन्धित (Unrestricted)** - इस पुस्तक प्रणाली मे परिक्षार्थियों को कोई भी पाठ्यपुस्तक और सन्दर्भ पुस्तक (Reference Book) परीक्षा भवन में ले जाने की छूट होती है परन्तु गाइड, नोट्स आदि ले जाने की छूट नहीं होती।

खुली पुस्तक प्रणाली की विशेषताएँ (Merits of Open Book Examination) -

1. इस प्रणाली मे ~~विद्यार्थी~~ शिक्षार्थी तथ्यों को रटने की जगह उसे समझने का प्रयास करते हैं।
2. इस प्रणाली मे शिक्षार्थी किसी एक पाठ्यपुस्तक को अपने अध्ययन का आधार बनाते है। जिससे परीक्षा के समय परीक्षा मे पूछे गये प्रश्नो से सम्बन्धित प्रश्नों पर तुरन्त पहुँचा जा सकें।

[3] इस प्रणाली में परीक्षा में तर्क प्रधान (logical) प्रश्न पूछे जाते हैं। जिसमें विद्यार्थी अपनी तर्क-शक्ति का प्रयोग करके व पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग करके प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

[4] पाठ्यपुस्तकों की छूट होने से नकल की कम सम्भावना रहती है।

(5) इसका उद्देश्य पढ़ाई को उपयोगिता आधारित बनाना है तथा यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षार्थी विषयों का गहराई से अध्ययन कर सके।

6) इस प्रणाली में छात्रों में विषयों के बारे में चर्चा करने, तार्किक ढंग से सोचने आदि की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा।

7.) यह परीक्षा मुख्य रूप से किसी विशेष विषय की समझ और विभिन्न स्थितियों में उस ज्ञान को लागू करने की क्षमता का मूल्यांकन करती है।

8) यह एक छात्र की महत्वपूर्ण सोच तथा समस्या को हल करने के कौशल का परीक्षण करती है।

9.) यह परीक्षा छात्रों में ज्ञान संचय के परम्परागत दूषित व संकुचित दृष्टिकोण को समाप्त करती है।

10) यह परीक्षा रटन्त स्मरण (Rote memory) के स्थान पर बोध (Comprehension) चिन्तन, मनन, विश्लेषण (analysis), संश्लेषण (synthesis) तथा समस्या समाधान (Problem-solving) आदि योग्यताओं का विकास करती है।

11.) खुली परीक्षा में बोध, कौशल, विश्लेषण, संश्लेषण आदि पर आधारित प्रश्नों को सम्मिलित किया जाता है जिससे छात्र परीक्षा में उन्हें उपलब्ध पुस्तकों से अपने उत्तरों को सीधे-सीधे न दे सकें।

12) खुली परीक्षा छोटी कक्षाओं की अपेक्षा उच्चस्तरीय कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है।

खुली पुस्तक परीक्षा की सीमाएँ (Demerits of Open Book Examination)

1. इस प्रणाली से विद्यार्थियों को परीक्षा का कोई भय नहीं रहता। जिससे वे पढ़ने में रुचि नहीं लेते।
2. इस प्रणाली में सभी विद्यार्थी पाठ्य पुस्तकों से प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं जिससे यह ज्ञात नहीं होता है कि उन्हें पाठ्य विषय-वस्तु का कितना ज्ञान है।
3. परीक्षा भवन में परीक्षा देने जैसा माहौल नहीं रहता
4. यह छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं है।

Scanned by TapScanner

Grade system (ग्रेड प्रणाली)

भारत देश में सबसे पहले मुदालियर आयोग (1952-53) ने ग्रेड प्रणाली का सुझाव दिया। इसके बाद कोठारी आयोग (1964-66) तथा इसके बाद N.C.E.R.T और U.G.C ने ग्रेड प्रणाली को सही माना।

ग्रेडिंग प्रणाली (Grading system)

ग्रेडिंग प्रणाली में परीक्षार्थियों को विषय विशेष के अंकों के आधार पर 5, 7 या 9 श्रेणियों में बांट दिया जाता है। जैसे — A B, C D, F & A B C D E F आदि।

पाँच बिन्दु ग्रेड प्रणाली (Find Point Grading system)

ग्रेड Grade	A	B	C	D	F
ग्रेड बिन्दु Grade Point	4	3	2	1	0
शाब्दिक अर्थ Verbal Meaning	Out standing विशिष्ट	उत्तम (Above average)	औसत (Average)	निम्न (Below average)	अनुत्तीर्ण (fail)

सात बिन्दु ग्रेड प्रणाली (Seven Point Grading system)

ग्रेड	O	A	B	C	D	E	F
ग्रेड बिन्दु	6	5	4	3	2	1	0
शाब्दिक अर्थ	Out standing विशिष्ट	Very good अति उत्तम	Good उत्तम	Average औसत	Satisfactory संतोषप्रद	Poor निकृष्ट	Very Poor निकृष्टतम

Grade system में मूल्यांकन सीधे ग्रेडों में किया जाता है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर प्राप्तांकों को भी Grade में बदल दिया जाता है। इसके लिए प्राप्तांकों के वितरण को N PC के आधार पर 7 भागों में विभाजित करके उन्हें Grade प्रदान किये जाते हैं।

Scanned by TapScanner

छात्रों के उत्तरों को सीधे-2 ग्रेड देकर मूल्यांकित करने की स्थिति में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को परीक्षक अलग-अलग ग्रेड प्रदान करेगा तथा फिर सम्पूर्ण उत्तरपुस्तिका के लिए ग्रेड औसत ज्ञात कर लिया जाता है। ग्रेड औसत ज्ञात करने के लिए पहले सभी ग्रेडों को ग्रेड बिन्दुओं (Grade Points) में बदला जायेगा फिर उनका औसत ज्ञात कर लिया जाता है। जिसे ग्रेड बिन्दु औसत (Grade Point Average) कहा जायेगा।

उदाहरण -
माना किसी प्रश्न पत्र में 10 प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्नों में शिक्षक द्वारा अलग-2 ग्रेड दिये गये हैं तब ग्रेड बिन्दु औसत इस प्रकार निकालेंगे

प्रश्न	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	ग्रेड बिन्दु औसत
ग्रेड अक्षरों में	A	A	B	B	C	C	A	A	A	B	
ग्रेड अंकों में	5	5	4	4	3	3	5	5	5	4	43/10 = 4.3 = (B)

अतः ग्रेड बिन्दु औसत (B) होगा।

[Note – Seven Point scale के अनुसार A = 5, B = 4 व C = 3]

संचयी ग्रेड बिन्दु औसत (Cumulative Grade Point Average

विभिन्न विषयों से प्राप्त ग्रेडों का औसत ग्रेड बिन्दु संचयी ग्रेड बिन्दु औसत (Cumulative Grade Point Average) या CGPA कहते हैं।

उदाहरण -

विषय	Hindi	English	Maths	SST	Sci	ग्रेडों का औसत	संचयी ग्रेड बिन्दु औसत
ग्रेड अक्षरों में	A	B	A	A	A		
ग्रेड अंकों में	5	4	5	5	5	24	24/5 4.8

~~4.8~~ क्योंकि यह 4.5 से अधिक है अतः Grade (5) होगा

ग्रेड प्रणाली की विशेषताएं (Merits of Grading System)

(1.) ग्रेड प्रणाली द्वारा प्राप्त परीक्षा परीणाम अधिक विश्वसनीय होता है क्योंकि प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर तैयार श्रेणी प्रणाली मे 0 से 100 तक अंक प्रदान किये जाते हैं जबकि ग्रेड प्रणाली मे 5, 7 या 9 बिन्दु प्रणाली को अपनाया जाता है।

(2.) विभिन्न विश्वविद्यालयो के द्वारा घोषित परिणामो की तुलना Grading system से की जा सकती है।

(3) यह प्रणाली विभिन्न विषयो तथा विभागो मे छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने मे सहायक है।

(4) अंको के विपरित ग्रेड विषयो की भिन्नता से प्रभावित नही होते।

ग्रेड प्रणाली की कमियाँ (Demerits of Grading system)

1.) ग्रेडिंग प्रणाली से टॉपर विद्यार्थियों को नुकसान होता है। क्योंकि अभी तक टॉपर छात्रों को 100% अंक प्राप्त करने तक का मौका मिल सकता था, लेकिन ग्रेडिंग सिस्टम मे वह चाहे जितना अच्छा लिखे वह छात्र 95% से अधिक अंक प्राप्त नही कर सकेगा।

2.) ग्रेड पैमाने (5, 7 या 9) के विषय मे सभी विद्वान एकमत नही है।

3.) यह प्रणाली भी अंक प्रणाली की तरह व्यक्तिनिष्ठ (subjective) है।

4.) ग्रेडिंग सिस्टम मे यह पता लगाना एकदम मुश्किल होता है कि असल मे मार्क्स कितने आए हैं। इससे ज्यादा मेहनत करने वाले विद्यार्थी तथा बाकी विद्यार्थी मे ज्यादा फर्क नही रह जाता।

5.) Grading system से विद्यार्थी अपना सही आकलन नहीं कर सकता वह किस जगह कमजोर है वह कहां ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है इसका भी आसानी से पता नहीं चल पाता।

Scanned by TapScanner